डॉ0 निरंजन मिश्र की कृतियों में युगबोध

संस्कृत विषय में पी-एच.डी की उपाधि हेतु

शोध-प्रबन्ध की प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थिनी

चिंकी कुमारी

शोध निर्देशिका

डॉ0 अनीता
असिस्टेंट प्रोफेसर

संस्कृत विभाग, कला संकाय,

दयालबाग शिक्षण संस्थान, (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा 282005

2022

भूमिका

वागर्थाविव सम्प्रक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ।।[1]

(रघु०1/1)

संस्कृत भाषा प्राचीन काल से ही ऋषि-मुनियों की भाषा रही है तथा संस्कृत साहित्य एक अद्वितीय, अद्भुत, अपरिमित साहित्य है। जिसकी श्रीवृद्धि चिरन्तर काल से ही अबाध रूप से प्रवाहमान है। संस्कृत भाषा पूर्णतया वैज्ञानिक भाषा है। देववाणी संस्कृत पवित्र भारत भूमि की दिव्यनिधि वेद है। यह भाषा वेद, ब्राह्मण, उपनिषदों तथा समस्त ज्ञान-विज्ञान परक विधाओं की जननी है। इसमें निबद्ध ज्ञान-परम्परा सहज में ही उदात्त भावों के साथ सम्बन्ध स्थापित करा देती है । युग-युगान्तर से संस्कृत साहित्य भारत व भारतीयता की आत्मा रहा है। संस्कृत साहित्य में निहित भावना मानव जाति के लिए सुखद एवं आनंद का अनुभव प्रदान, कर पुरुषार्थ की ओर प्रेरित करने वाली है। यह भाषा विचारों की पवित्रता का अनोखा रत्न है। उदार भावना के साथ संपूर्ण मानव समाज को सर्वांगीण विकास की ओर उन्मुख करने वाली दिव्य, अजस्र, धाराप्रवाह है। जो कि वैदिक काल से ही निरंतर प्रवाहमान है। ऋग्वेद काल से वर्तमान तक संस्कृत भाषा वाङ्मय अन्य समस्त भाषाओं के साहित्य से कहीं अधिक समृद्ध है। जो कल्याणकारी अनेकानेक अमूल्य ग्रंथों का सागर है। संस्कृत का ध्येय **"सत्यं शिवं सुन्दरम्"** रहा है। **संस्कृत** शब्द की व्युत्पत्ति **सम्** उपसर्ग पूर्वक **सुट्** के आगम से'**कृ**'धातु में'**क्त** प्रत्यय के योग से हुई,जिसका अर्थ है- **परिष्कृत, शुद्ध, निर्दोष** एवं **अलंकृत** ।

अयं निज: परोवेति गणना लघु चेतसाम् ।[2]
उदारचरितानां तु वसुधैवकुटुंबकम् ।।

(हितो०मित्र० 1/70 पृ०सं० 36)

वैदिक साहित्य से निरंतर आधुनिक साहित्य का उद्देश्य मानव कल्याण एवं विश्व शांति स्थापित करना है। साहित्य समाज का दर्पण कहा गया है। साहित्यकार समाज में प्रचलित मानव की विभिन्न प्रकार की गतिविधियों को विभिन्न विधाओं के रूप में सृजित करता है। वह वर्तमानगत सामाजिक यथार्थ समस्याओं को उजागर करता

है साथ ही इन समस्याओं का सरल, सुलभ, उपयोगी समाधान प्रस्तुत करता हुआ, सदैव ही समाज का पथ-प्रदर्शक रहा है। जो संपूर्ण मानव जाति एवं प्रकृति के साथ समन्वय स्थापित करने में सहायक है। सर्वप्रथम भाषा के अर्थ में संस्कृत का प्रयोग वाल्मीकि रामायण में प्राप्त होता है। महर्षि वाल्मीकि को आदिकवि के रूप स्वीकार किया गया है। महर्षि वाल्मीकि की रामायण आदिकाव्य प्रतिष्ठा को प्राप्त है।

संस्कृत साहित्य को दो भागों में विभक्त किया है -

वैदिक साहित्य- वैदिक साहित्य को प्राचीन साहित्य के नाम से भी जाना जाता है। जिसके अंतर्गत वैदिक वाङ्मय ब्राह्मण ग्रंथ,आरण्यक, उपनिषद् इत्यादि आते हैं ।

लौकिक साहित्य - लौकिक साहित्य के अंतर्गत महाकाव्य, खंडकाव्य, लघुकाव्य, नीतिकाव्य, नाटक इत्यादि आते हैं।

कवि कार्य को ही काव्य की संज्ञा दी गई है।"**कवे कर्म: काव्यम्"** विद्वानों ने काव्य को अपने-अपने दृष्टिकोण से परिभाषित किया है-

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार- "वाक्यं रसात्मक काव्यम्"।[3]

अर्थात् रस से युक्त वाक्य ही काव्य है।

(सा०द० प्र०परि० पृ०सं 23)

आचार्य मम्मट के अनुसार- "तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुन: क्वापि "।[4]

अर्थात् दोषों से रहित, गुण युक्त,कहीं कहीं अलंकार युक्त, शब्द-अर्थ दोनों की ही समष्टि काव्य कहलाती है।

(का०प्र० प्र०उ० सू०1 पृ० सं 19)

वर्तमान समय में भी संस्कृत भाषा में विपुल मात्रा में विविध-विधाओं में लेखन कार्य हो रहा है। संस्कृत-कवि-श्रृंखला पुनः संस्कृत को नववधू के समान अपनी श्रेष्ठ काव्य कृतियों द्वारा अलंकृत कर रहे हैं और संस्कृत को जनमानस की भाषा बनाने में पूर्ण योगदान दे रहे हैं। विधाओं के स्वरूप में परिर्वतन होने के कारण, आज नित नए काव्य काव्यशास्त्रीय ग्रथों का प्रणयन भी हो रहा है। प्राचीन काव्यशास्त्र से अर्वाचीन काव्यशास्त्र अनेक मायनों में पृथक् है, जिसकी चर्चा यथा स्थान की जाएगी ।

निरंजन मिश्र का परिचय -

मेरे शोधकार्य की प्रस्तावित रूपरेखा के लेखक निरंजन मिश्र का जन्म 2 जनवरी 1966 को बिहार के भ्रमरपुर गॉव में हुआ । उनके पिता जी का नाम पंडित सुखदेव मिश्र तथा माता जी का नाम भवानी देवी था । उनके एक भाई पश्चिम बंगाल के एक विद्यालय में शिक्षक पद पर कार्यरत हैं। उनकी प्रारंभिक शिक्षा जन्मभूमि, भ्रमरपुर गांव में ही हुई। निरंजन मिश्र ने भ्रमरपुर गांव में स्थित दुर्गा संस्कृत उच्च विद्यालय से सन् 1981 में मध्यमा की शिक्षा प्राप्त की। राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, भागलपुर से सन् 1983 में उपशास्त्री शिक्षा का अध्ययन किया। दरभंगा के लगमा स्थित आदर्श संस्कृत महाविद्यालय से सन् 1986 में शास्त्री और कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय से सन् 1988 में आचार्य तथा 1990 में पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की । उन्होंने ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय से सन् 1992 में एम.ए. की डिग्री प्राप्त की । तत्पश्चात् धनबाद में स्थित टुंडू के सेंट्रल हाईस्कूल में संविदा पद पर अध्यापन कार्य किया ।

निरंजन मिश्र वर्तमान में हरिद्वार स्थित भगवानदास आदर्श संस्कृत महाविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं। मिश्र जी को अनेक साहित्यिक सम्मान एवं पुरस्कारों से अलंकृत किया गया यथा- कालिदास संस्कृत अकादमी पुरस्कार तथा दिल्ली संस्कृत अकादमी पुरस्कार इत्यादि । निरंजन मिश्र वर्तमान में भी अबाध गति से काव्य लेखन में संग्लन हैं। अभी तक उनकी स्वरचित लगभग पंद्रह काव्य रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। इनकी काव्य रचनाओं में सहृदयों के लिए आनन्द सिन्धु-प्रवाह है। निरंजन मिश्र की शैली में वर्णन-नैपुण्य,

निरीक्षण-प्रज्ञा, कवि-प्रतिभा, रीतिप्रौढ़ता इत्यादि गुणों का पूर्ण उन्मेष है। कोमलकांत पदावली और ओजपूर्ण शब्दयोजना में भी उनकी शक्ति विलक्षण है।

निरंजन मिश्र की कृतियों का परिचय -

महाकाव्य -1. गंगापुत्रावदानम् (कालिदास पुरस्कार तथा साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत)

(सर्ग 23) (2016)

2. ग्रन्थिबंधनम् (2016)

लघुकाव्य - 1. काव्यमाला

2. काव्यकुञ्जम् (2006)

3. केदारनाथघाटी विधवा बभूव (2014)

4. ग्रामशतकम्

5. वन्देभारतम् (2015)

6. प्रमत्तकाव्यशतकम्

7. रमणीयादपि रमणीयम् (2018)

8. अरण्यरोदनम्

गीतकाव्य -1. कुटजकुसुम

2. गीतवल्लरी

मुक्तककाव्य -1. मिश्र मौक्तिकम् (2019)

गद्यकाव्य - 1. मनोहर कथावली (बालकथा) (2019)

2. दामिनी (उपन्यास)

व्याख्यात्मक काव्य- 1. कुवलायनन्द

2. नलचंपू (प्रथम सर्ग)

3. नैषधीयचरितम्   (प्रथम एवं तृतीय सर्ग)

4. मुद्राराक्षम्

5. मदालसाचम्पूकाव्यम्

6. शुकनासोपदेश

शोध का महत्त्व - निरंजन मिश्र ने कृतियों माध्यम से अनुभूति और प्रगतिशील विचारों के आधार पर सामाजिक यथार्थ के परिपेक्ष्य में विभिन्न संदर्भों के प्रति अभिव्यक्ति प्रदान की है। जिस प्रकार सागर की गहराई एवं व्यापकता का मापन नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार लेखन की गहराई एवं व्यापकता का मापन दुर्लभ कार्य है। फिर भी शोधार्थी अथवा पाठक यथाशक्ति इस संपूर्ण काव्य रूपी सागर के रसस्वादन करने की प्रबल इच्छा रखता है। इनकी अधिकांश कृतियों में सम-सामयिक घटनाओं एवं सामाजिक वृतान्तों का निरूपण प्राप्त होता है। निरंजन मिश्र, आधुनिक कवि हैं अर्थात् यह कहना भी अनुचित नहीं होगा कि वह वर्तमान में सामाजिक मुद्दों, रूढ़ियों, कुप्रथाओं तथा सामाजिक शोषण के विरुद्ध जनमानस की आवाज हैं, जो अपनी अलौकिक प्रतिभा के रूप में उद्धघोषित है। प्रकृति से भिन्न इस संसार में कुछ भी नहीं है, चर-अचर जगत् में सब कुछ प्रकृति के अधीन है। मनुष्य इतना कठोर हो चुका है कि वह प्राकृतिक अवयवों के साथ खिलवाड़ करता हुआ, प्राकृतिक आपदाओं को आमंत्रित कर रहा है। आज का मनुष्य आधुनिकता एवं पाश्चात्य सभ्यता की ओर निरंतर उन्मुख होता जा रहा है। वह अपने दैनिक जीवन में स्वयं का अवलोकन विस्मृत कर चूका है। वह स्वयं के विवेक-बुद्धि तथा तर्क-वितर्क का प्रयोग केवल स्वार्थ सिद्धि हेतु कर रहा है। अतः प्रस्तुत शोधकार्य उपरोक्त बिंदुओं की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मेरी दृष्टि में प्रस्तुत शोधकार्य मनुष्य को स्व से सर्वस्व की भावना तक ले जाने का कार्य करेगा ।

शोधकार्य के उद्देश्य -

❖ संस्कृत साहित्य के प्रति समाज को आकर्षित कर संस्कृत विषय एवं भाषा में रुचि तथा जिज्ञासा उत्पन्न करना ।

❖ शोधकार्य के माध्यम से संस्कृत साहित्य में विद्यमान नवीन साहित्यिक मूल्यों द्वारा मानव के सामाजिक मूल्यों के निर्माण में सहायता करना तथा उन्हें प्रचारित-प्रसारित करना ।

❖ समाज में प्रचलित, सामाजिक रूप से अनुपयोगी रूढ़ियों एवं परंपराओं को समाज के सम्मुख लाना।

❖ मनुष्य में कर्म के प्रति समर्पण, निष्ठा, एवं जन-कल्याण के लिए त्याग की भावना का संचार करना।

❖ समाज में व्याप्त अन्याय, अनैतिकता, भ्रष्टाचार एवं सामाजिक कुरीतियों को नष्ट करना।

❖ पाश्चात्य सभ्यता से ग्रस्त समाज को पुनः भारतीय संस्कृति के वास्तविक मूल्यों से परिचित करना ।

प्रस्तुत शोध की प्रेरणा एवं चयन - संस्कृत साहित्य में आधुनिक साहित्य सदैव मेरी रुचि का क्षेत्र रहा है। मैंने व्यक्तिगत रूप से जिज्ञासावश इनकी रचनाओं का अध्ययन किया है, जिन्हें पढ़कर सहज ही उनसे प्रभावित हुआ जा सकता है। उनका भाषा नैपुण्य ग्राह्य है। भाव-प्रवाह एवं भाषा सौष्ठव उनके लेखन की अन्य विशेषताएँ है। मिश्र जी की रचनाओं में विषय बड़े ही मनोरम ढंग से प्रवाहित होता है तथा तथ्यों को स्वयं में समाहित किए हुए अनुकूल प्रतिफल तक पहुंचता है । तदर्थ मैंने निरंजन मिश्र की कृतियों को अपने शोधकार्य का विषय चुनते हुए उनकी स्वरचित कृतियों को ही अपने अध्ययन का विषय बनाया है । मैं इनकी काव्य प्रतिभा पर मुग्ध हूँ, इसलिए उनकी कृतियों पर शोधकार्य करना अपना पुण्यकर्म समझती हूँ । मुझे निरंजन मिश्र पर शोधकार्य कर के अत्यन्न प्रसन्नता एवं संतुष्टि मिलेगी ।

प्रस्तुत शोध विषय से पूर्व हुए शोधकार्य -

प्राचीन संस्कृत साहित्य ही नहीं अपितु आधुनिक संस्कृत साहित्य भी समृद्ध एवं प्रभावशाली है। जिस कारण आधुनिक संस्कृत साहित्य में विविध विषयों पर नवीन दृष्टि से शोधकार्य किए जा रहे है विविध विश्वविद्यालयों, शोधगंगा तथा शोधगंगोत्री इत्यादि का अन्वेषण करने से यह ज्ञात हुआ है कि मेरे द्वारा चयनित विषय " **निरंजन मिश्र की कृतियों में युगबोध "** पर मेरी दृष्टि में अभी तक कोई शोधकार्य नहीं हुआ है। अभी तक मेरे संज्ञान में मिश्र की रचनाओं में से **'गंगापुत्रावदानम्'** नामक (महाकाव्य) पर एकमात्र समीक्षात्मक शोधकार्य, गढ़वाल यूनिवर्सिटी में चल रहा है, यह जानकारी मुझे निरंजन मिश्र जी के द्वारा दूरवाणी से प्राप्त हुई है। मैं निरंजन मिश्र की अब

तक प्रकाशित कृतियों पर ही शोधकार्य करूंगी । अतः विद्वत् वर्ग मुझे इस विषय पर शोधकार्य करने हेतु अनुमति प्रदान कर, अनुगृहीत करें । मैं, आपकी सदैव आभारी रहूँगी ।

शोध प्रबन्ध कार्य से पूर्व का अध्ययन-

प्रस्तुत शोध विषय के विस्तृत एवं गहन अध्ययन हेतु विविध विश्वविद्यालयों, लाइब्रेरी, इंटरनेट पुस्तकालयों, पत्र-पत्रिका एवं शब्दकोशों का अध्ययन किया जाएगा। मूल-ग्रंथ, सहायक-ग्रंथ, तथा आलोचनात्मक इत्यादि ग्रंथों का अध्ययन किया जाएगा। इनके अतिरिक्त इंटरनेट के माध्यम से विभिन्न वेबसाइट तथा ई-लाइब्रेरी इत्यादि का भी अध्ययन भी किया जाएगा । क्योंकि वर्तमान में तकनीकी व्यवस्था का महत्त्व शैक्षिक दृष्टि से भी सराहनीय है।

शोध प्रविधि -

मनुष्य मननशील प्राणी होने के कारण प्रत्येक क्षण कुछ नया करने का प्रयास करता है। विवेकशील होने के कारण वह, जिज्ञासावश विभिन्न विषयों में अन्वेषण करता रहता है। यह अनुसंधान स्थायी ज्ञान प्राप्ति का एक सशक्त माध्यम है। इसके लिए अनेक पद्धतियां प्रचलित है अतः मेरे द्वारा किये जा रहे है शोधकार्य में अवश्यकता अनुसार वर्णनात्मक, विवरणात्मक, विवेचनात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा ।

उपसंहार - प्रस्तुत शोधकार्य के माध्यम से अध्येय कृतियों में निहित सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं दार्शनिक विचारों एवं मूल्यों की वर्तमान में प्रासंगिकता एवं उपयोगिकता प्रस्तुत की जाएगी ।

प्रस्तावित रूपरेखा

निरंजन मिश्र की कृतियों में युगबोध

प्रथम अध्याय- कृतिकार एवं कृतियों का परिचय

(क) निरंजन मिश्र का जीवन- परिचय

(ख) निरंजन मिश्र का साहित्यिक- परिचय

द्वितीय अध्याय- अध्येय कृतियों में सांस्कृतिक तथा धार्मिक संदर्भ

(क) लोक संस्कृति

(ख) जीवन मूल्य

(ग) चेतना व राष्ट्र कल्याण की भावना

(घ) सहिष्णुता, सौहार्द्र एवं विश्वबंधुत्व की भावना

तृतीय अध्याय - अध्येय कृतियों में दार्शनिक, सामाजिक एवं राजनीतिक संदर्भ

चतुर्थ अध्याय - अध्येय कृतियों में साहित्यिक संदर्भ

(क) कलापक्ष

(ख) भावपक्ष

पंचम अध्याय :- समकालीन रचनाकारों में डॉ0 निरंजन मिश्र का स्थान ।

उपसंहार - अध्ययन का निष्कर्ष एवं वर्तमान में प्रासंगिकता ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

मूल ग्रंथ-

1. ग्रंथिबंधनम् महाकाव्य, डॉ0 निरंजन मिश्र, सत्यम् पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली 2016

2. रमणीयादपि रमणीयम् , डॉ0 निरंजन मिश्र, सत्यम् प्रकाशन, नई दिल्ली 2018

3. वन्देभारतम् , डॉ0 निरंजन मिश्र, सत्यम् प्रकाशन, नई दिल्ली (2015)

4. काव्यकुञ्जम् , डॉ0 निरंजन मिश्र, सत्यम् प्रकाशन, नई दिल्ली 2006

5. मिश्र मौक्तिकम् , डॉ0 निरंजन मिश्र, सत्यम् प्रकाशन, नई दिल्ली 2019

6. केदारनाथघाटी विधवा बभूव, डॉ0 निरंजन मिश्र, प्रगतिशील प्रकाशन, नई दिल्ली 2014

7. गंगापुत्रावदानम् , डॉ0 निरंजन मिश्र, सत्यम् प्रकाशन, नई दिल्ली 2016

सहायक ग्रंथ-

1. आधुनिक संस्कृत काव्य परंपरा, केशवराय मुगलावर, चौखंभा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी

2. संस्कृत साहित्य-बीसवीं शताब्दी, राधावल्लभ त्रिपाठी, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, दिल्ली 1999

3. संस्कृत साहित्य का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी 1987

4. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, साहित्य संस्थान, इलाहाबाद 1982

5. भारतीय संस्कृति, नरेंद्र मोहन, प्रभात पब्लिकेशन, दिल्ली 1997

6. संस्कृति के नैतिक मूल्य, जगत नारायण दुवे, संजय प्रकाशन, दिल्ली सन् 1999

7. संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना, डॉ0 हरिनारायण दीक्षित, देववाणी परिषद् , दिल्ली

8. साहित्यदर्पण, डॉ0 सत्यव्रत सिंह, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी 2015

9. लौकिक संस्कृत साहित्य का इतिहास, डॉ0 कृष्णलाल, नाग प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली

10. आचार्य विश्वेश्वर, काव्यप्रकाश, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी 1960

11. हितोपदेश, पं रामेश्वर भट्ट, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली 2015

कोशग्रंथ -

1. संस्कृत हिन्दी-कोश, वामन शिवराम आप्टे, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी २००९

2. पारिजात कोश, प. ईश्वरचंद्र, परिमल पब्लिकेशन, 2004

3. अमर कोश, सृजन झा, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानम, मुंबई

पत्र-पत्रिकाएं -

1. अर्वाचीन संस्कृत, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली

2. विश्व संस्कृतम् , डॉ0 देवराज शर्मा, विश्वेश्वरानन्द -वैदिक शोध संस्थानम् , होश्यारपुर, पंजाब 2020

3. https://www.livehindustan.com/

4. Livehindustan, (2021) story-dr-niranjan-mishra- -the-banabhatta-award retrieved from https://www.livehindustan.com/uttarakhand/haridwar/story-dr-niranjan-mishra-received-the-banabhatta-award-4407714.html on 21 august 2021

5. Setu (2020), Vande-Bharatam-Niranjan-Mishra retrieved from https://www.setumag.com/2020/06/Vande-Bharatam-Niranjan-Mishra.html?m=1

a. https://www.livehindustan.com/ on 28 nov. 2020.

संकेताक्षर सूची

1. रघु॰ - रघुवंशम्
2. हितो॰मित्र॰ - हितोपदेश, मित्रलाभ
3. सा॰द॰ प्र॰परि॰ - साहित्य दर्पण, प्रथम परिच्छेद
4. का॰प्र॰ प्र॰उ॰ - काव्य प्रकाश, प्रथम उल्लास